# आपातकाल में सृजन फुलवारी

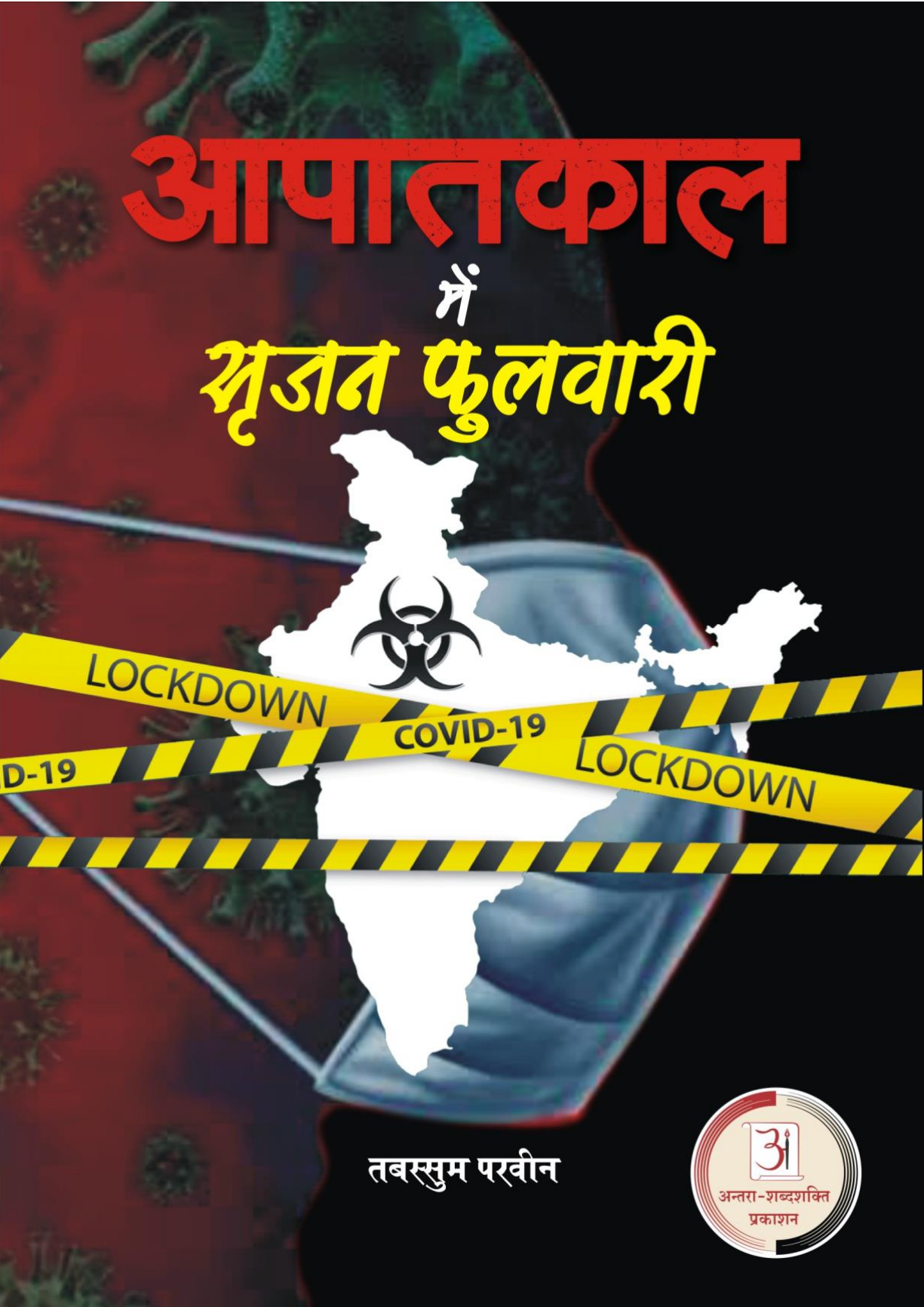


तबस्सुम परवीन

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

# आपातकाल में सृजन फुलवारी

तबस्सुम परवीन

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-117-6
संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, तबस्सुम परवीन
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

**THE BOOK WRITTEN BY TABSSUM PARVEEN**

**वैधानिक चेतावनीः-** इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

# आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1. | खामोशियाँ | 6 |
| 2. | अभिलाषा | 7 |
| 3. | प्यारा सा वो बचपन | 8 |
| 4. | नारी शक्ति | 9 |
| 5. | माँ की ममता | 10 |
| 6. | किसे खबर है | 11 |
| 7. | दिल ढूंढता है | 12 |
| 8. | अधूरी ख्वाहिशें | 13 |
| 9. | कशमकश | 14 |
| 10. | दिल के जज्बात | 15 |
| 11. | तुम मुझमें हो | 16 |
| 12. | अक्स | 17 |
| 13. | मेरी आईना | 18-19 |
| 14. | मोक्ष | 20-21 |

# खामोशियाँ

मन इतना बोझिल क्यों हैं
दिल फिर भी खाली-खाली सा है।

दिल में इतना शोर क्यों है
जुंबा पे इतनी खामोशी क्यों है?

आसपास मेरे है कितने अपने
पर आज इतना उदासी क्यों है?

मेरे लबों पे है बेइंतहा मुस्कुराहटें
पर दिल अश्कों से डुबा समंदर क्यों है?

मन इतना बोझिल क्यों हैं
दिल फिर भी खाली-खाली सा है।

शहरों मे गूंजती है किलकारी,
पर नज़रों से इतना ओझल क्यों है?

रिश्ते, नाते, अपने, बेगाने...
सब में आज इतनी फासले क्यों है?

मन इतना बोझिल क्यों हैं
दिल फिर भी खाली-खाली सा है।

# अभिलाषा

न कोई आशा थी
न ही अभिलाषा।
अच्छा हुआ अंतरा" बदल दी
तुमने जीवन की परिभाषा।
रह गई थी सिर्फ उदासी,
सब कुछ अधूरा सा लगता था,
शब्दों के घेरों में खुद को ऐसा घेरा
इस अधूरेपन को कर दिया
"अंतरा" ने पूरा।
जीने की थी न अभिलाषा,
और न कोई आशा।
शब्दों की शक्ति में खोकर
बदल गई जीने की परिभाषा।
तुझसे दिल का दर्द बाटूं,
तुझे ही सपना बताऊं।
तू मेरी सखी है,
तुझे ही अपना नगमा सुनाऊं।
न कोई आशा थी
और न अभिलाषा
अच्छा हुआ 'अंतरा' तुमने
बदल दी जीवन की परिभाषा।

# प्यारा सा वो बचपन

दिल बैचैन हो जाता है
जब याद आता है
प्यारा सा वो बचपन
प्यार से सजा वो आँगन।
बिन कहे पढ लेते थे हम
एक दूसरे का मन
मां की परवाह करने की
वो प्यारी सी आदत।
मां का वो गुस्सा होना
मां को फिर भी सताना
फिर मां के गले लग जाना
ममता से भर उसका मुस्कुराना।
हमे परेशान देख कर
बाबा का वो समझाना
शाम ढलते सखियों के संग
खेल-खेल कर थक जाना।
बहुत याद आता है
अल्हड़ सा वो बचपन
अब सूना हो गया
वो प्यारा सा आंगन।
दिल बैचैन हो जाता है,
जब याद आता है वो बचपन।

# नारी शक्ति

पलटोगे जब भी इतिहास के पन्ने,
तुम सब मुझको ही दोहराओगे।

मेरे वजूद में है खुदा का पहरा,
क्या मेरी हस्ती मिटा पाओगे।

दूर तलक हूँ, पास में भी हूँ।
तुम्हारी आज के हर सुख में भी हूँ।

खेत मे हूँ खलिहान में भी हूँ।
तुम्हारी तो चारो दीवारों में भी हूँ।

तुम्हारे आंखों के ऑंसू में भी हूँ।
तुम्हारे आंगन की फूलों में भी हूँ।

क्या मेरे वजूद को झुठलाओगे।
पलटोगे जब भी इतिहास के पन्ने .....।।

# माँ की ममता

माँ है तो मुमकिन है।
माँ नही तो हर कदम पर मुश्किल है।।

हर तरफ दुखों का बादल है।
माँ तो खुशियों का आंचल है।।

माँ है तो मुमकिन है
माँ नही तो मुश्किल है।।

माँ ये जीवन तो बस तेरा है।
इस दुनिया ने मुझको यूँ ही घेरा है।।

माँ तू आज फिर से अपने आंचल मे छुपा ले।
बाकी तो सौदागरों का बस डेरा है।।

जब भी मुश्किलें आती है।
मुझको तो बस तेरी सूरत याद आती है।।

माँ तू तो खुशियो का खजाना है।
वर्ना हर तरफ तो रिश्तो को आज़माना है।।

माँ तू साथ है तो मुमकिन है।
माँ अगर तू नही तो हर कदम पर मुश्किल है।।

# किसे खबर है

किसे खबर है
कौन कहां बिछड़ जाए,
बात ऐसी करो,
जो मेरी जिंदगी से जुड़ जाए,...!
मज़ा तो तब है,
जिंदगी मे जीने का,
जिस रात को चाहूं जिधर,
वो मुड़ जाए,...!
किसे खबर है कौन कहां बिछड़ जाए,
बात ऐसी करो, जो मेरी जिंदगी से जुड़ जाए,...!
तेरे लबों पर मुस्कुराहटें है मुझे देखकर,
पर चाहती हूं,
तेरे दिल की आईने में भी
मेरी सूरत नज़र आए,...!
किसे खबर है कौन कहां बिछड़ जाए,
बात ऐसी करो, जो मेरी जिंदगी से जुड़ जाए,...!
तेरी बातों मे भी हूं,
तेरी रातों मे भी हूं,
मज़ा आए जीने में
तेरे ख्यालों में भी मैं ही नज़र आऊं,...!
किसे खबर कौन कहां बिछड़ जाए!
बात ऐसी करो, जो मेरी जिंदगी से जुड़ जाए,...!

# दिल ढूंढता है

मैं तो अपने नगमों में,
खुशियों का तराना ढूंढती हूं,...!
इस दुनिया में जीने का, बहाना ढूंढती हूं,..!
होंठ खामोश रहे पर,
कह डालूं मै दिल की बात!
जाने कब से इस अंदाज का, फसाना ढूंढती हूं ,...!
आंखो ही आंखो में
मेरे समझ जाये जज्बात।
मै तो सारी दुनिया में, ऐसा दीवाना ढूंढती हूं,...!
हर महफिल में ढूढें
मुझेको ही उसकी नजर!
न जाने कब से ऐसा मैं, ऐसा परवाना ढूंढती हूं,...!
उसके ख्यालों में रहूं,
उसके सवालो में रहूं,
न जाने कब से ऐसा, आशिक पुराना ढूंढती हूं,...!

सारी दुनिया को छोड़ कर
सिर्फ थामे मेरा हाथ।
बस मैं एक ऐसा ही, आशिक आवारा ढूंढती हूं,...!
शोहरत को छोड़ कर
चले आए मेरे पास।
न जाने कब से ऐसा, अनमोल खजाना ढूंढती हूं,...!
मैं तो अपने नगमों में,
खुशियों का तराना ढूंढती हूं,...!
इस दुनिया में जीने का, बहाना ढूंढती हूं,..!

# अधूरी ख्वाहिशें

आस अधूरी, प्यास अधूरी
कहते-कहते हर बात अधुरी!

मेरी पत्थराई आंखो में पलते हैं
हर ख्वाब अधूरे,
पिघलते हुए हर अश्कों के,
हर राज अधूरे, जज्बात अधूरे!

उल्फत-ए-मोहब्बत में
तेरी याद अधूरी।
सहमी-सहमी हर सांस अधूरी।
हर रिश्ते अधूरे, हर नाते अधूरे।।

जीने के अरमानों ने,
दुनिया के अहसानों ने,
अपनों की ख्वाहिशों में कर दी,
हर चाहत अधूरी, हर उम्मीद अधूरी।।

आस अधूरी, प्यास अधूरी
कहते-कहते हर बात अधूरी!

# कशमकश

तुम यूं ना मुस्कुराओ
मैं होश खो रही हूं।
पतवार न जाने
खो गई है कहां?
डगमग है मेरी नईयां
मै डूब सी रही हूं।
मैं होश खो रही हूं।
अब नहीं है मुनासिब
बचना इस दुनिया में
सब मतलबी है
कोई नही है अपना!
मैं होश खो रही हूं।
दिल के ज़ख्मों पर
कोई मरहम लगा दे।
मझधार में है मेरी नईयां,
कोई उसको बता दे।
मैं होश खो रही हूं।
लफ्जों में कह दो,
साफ-साफ मुझसे।
न लो और इन्तहां,
मैं जिंदगी से घबरा रही हूं।
मैं होश खो रही हूं।
तुम यूं ना मुस्कुराओ
मैं होश खो रही हूं।

# दिल के जज्बात

तेरे हर नज्म़ मे कई शायरों के अल्फाज़ नज़र आते हैं।
कभी दूर तो कभी पास नजर आते हैं।

पढ़ के तेरी ये गज़ल क्या दिल से सदाएं आती है,
तेरे हर नज्म़ में क्या औरों के ज़ज्बात नज़र आते हैं।

बन के तसव्वुर क्या औरों के होठों में,
तेरी इस नज्म़ में पल मुस्कान के नजर आते हैं।

दिल की हालत को क्या अपने हर्फों मे पिरोया है,
पढ़ के तेरी ये नज्म़ अश्कों के आगाज नजर आते हैं।

तेरी कांटो भरी राहों मे पड़ते हुए पैरों के छाले,
पढ कर तेरी ये नज्म़ फूलों के जज्बात नजर आते हैं।

तेरी हर नज्म़ में औरो के जज्बात नजर आते हैं,
कभी दूर तो कभी पास नजर आते हैं।

# तुम मुझमें हो

तेरी फुरकत का जब एहसासे जवां होता है।
मुझको लम्हों में भी सदियों का गुमां होता है।।

दिल में हर वक्त राह खुलती है एक नई।
इतना खुबसूरत हर आईना कहां होता है।।

दिल की बात लफ्जों में कब होती है बयां।
हर फसाना कहीं गहराई में बसा होता है।।

थक सी गई थी अपनी जिंदगी से मैं अब।
तेरा एहसास मेरे दिल को फिर से जंवा करता है।।

तुने आते ही छू लिया जज्बातों को।
वर्ना औरों को इसका कहां पता होता है।।

दोस्तों ने वह करम किए है मुझ पर "तबस्सुम"।
अपने साये में भी दुश्मन का गुमां होता है।।

# अक्स

दिल पे एक अक्स बनाती हूं फिर मिटा देती हूं।
इस तरह अपनी तमन्नाओं को दबा देती हूं।

मैं जानती हूं मुझे खाक कर के छोड़ेगा, वो सरारा।
जिसे मैं खुद अपने ही दामन से हवा देती हूं।

उसकी राहों मे मखमली चादर बिछाई मैंने।
अपने छालों से भरे पांव को छुपा देती हूं।

छीन लो मुझसे वो खुशनुमा यादें,
अपनी तकलीफों को मै छुपा देती हूं।

लेते जाओ जाते-जाते मेरी बेशुमार वफाएं,
मै तुम्हें वफ़ा का पता ठिकाना बता देती हूं।

# मेरी आईना

जिंदगी को बड़े ही, करीब़ से देखा है मैंने!
सभी ने किताबों में पढ़ा है, उसे जीया है मैंने।

वो बेगैरत हैं,
जो नुक्स निकालते हैं,
हर दर्द बिन कुछ कहे
चुपचाप सहा है मैंने!
सभी ने किताबों में पढ़ा है,
उसे जीया है मैंने।

फर्ज तले दबी रही,
हमेशा जिंदगी मेरी,
फिर भी मुस्कुरा कर हर पल
ज़हर पीया है मैंने।
सभी ने किताबों में पढ़ा है,
उसे जीया है मैंने।

दिल की जज्बातों को छुपाकर
हँसती रही हमेशा,
अपने हिस्से की खुशियों को
औरों को दिया है मैंने।
सभी ने किताबों में पढ़ा है,
उसे जीया है मैंने।

अपनों की खातिर कर दी
कुर्बान ए जिंदगी।
अपने अरमानों को दबाकर
होंठो को सिया है मैंने!
सभी ने किताबों में पढ़ा है,
उसे जीया है मैंने।

जिंदगी बड़ी तूफानी थी,
उन अंधेरी सी रातों की,
फिर भी कोई चराग
बुझने न दिया है मैंने!
सभी ने किताबों में पढ़ा है,
उसे जीया है मैंने।

जिंदगी को बड़े ही, करीब़ से देखा है मैंने!
सभी ने किताबों में पढ़ा है, उसे जीया है मैंने।

# मोक्ष

नीला अंबर, लहराती नदियां,
प्रकृति से भरी ये फूलों की दुनिया,
जीवन के कड़वे सत्य को,
जब भी जान पाती हूं,
ये चीजे मोक्ष के आड़े आ जाती है,
दुनिया का मोह मन में आ जाता है।

हदय तले हर घड़ी घुटता है मन,
फिर भी मुझे मुस्कुराना है,
क्षमा याचना कर के फिर भी,
जीवन को स्वर्ग तो बनना है,
जीवन का कड़वा सत्य है,
सांसों के चलते मोक्ष कब पाया जाता है?

मुस्कुराता सबेरा,
मोती की जैसे ओस की बूंदे,
चहचहाती हुए पंछी,
कितने रंग, कितने रूप
इस जग में कितनी धूप,
ये सोच के ये मन घबराता है।

पर जीत लूं मै इस जग को,
ये मेरे हदय की अभिलाषा है,
फूल नही शाख बनूं, पंछी की डाल बनूं,
अस्तित्व के साये से प्रेम का मैं राग बनूं,
मेरी काया मेरी मेरी छाया,
मोक्ष के आड़े आ जाता है।

जीवन से मैं प्रीत करुं,
पर्वत सी मैं ढाल बनू,
ये मोह मुझे हर बार सताता है,
बिखरे रिश्ते, इसे सहेजूं, इसे समेटूं,
मेरे हाथ की अदृश्य लकीरें, विचलित मन,
फिर मोक्ष के आड़े आ जाता है।

**हिन्द व हिन्दी का सम्मान**
**है प्रमाण देशभक्ति का**
**आइए करें**
**सृजन शब्द से शक्ति का**

रचनाकार

**तबस्सुम परवीन**

अंबिकापुर (छत्तीसगढ़)

Email- siftain428@gmail.com

Mobile- 9575912335


सृजन एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमे नए मान्यता यह है कि सृजन का फल में मौलिकता एंव सम्यकता दोनो विघमान होते है। आज कल समझाया जाता है कि बने जीवन मे सृजनात्मक रहे। हम अगर सृजनात्मक न रहे तो बेहद परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

अभी वर्तमान का ही उदाहरण लीजिए कोरोना वायरस का आपातकालीन परिस्थिति आ पहुँची है और देखा जाए तो पुरा विश्व ही परेशानी का सामना कर रहा है। हमारे देश मे प्रधानमंत्री योजना गरीबो के हित मे कारगर साबित हो रही है। इससे काफी सहायता हो रही है। कम से कम इस विपदा मे भूख के शिकार तो नही हो रहे हैं। क्योंकि हमारे देश हमारा प्रशासन गरीब स्तर के लोगो के लिए पहले से ही योजना तैयार कर लिया था। यकीनन अगर ये योजना नहीं होती तो हमारे देश मे कोरोना के साथ साथ भूखमरी की भी आपातकालीन परिस्थिति आ कर खड़ी हो जाती।

इससे तो यही साबित होता है हमारे देश को या हर एक आम आदमी को सृजनात्मक होना बहुत जरुरी है।

अगर हम सभी सृजनात्मक हो तो कोई भी परेशानी हो हम खुद के साथ औरो की भी सहायता कर सकते है अर्थात सृजन हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग है।

मेरा मानना है अगर ये शक्ति हमारे पास है तो निश्चित रूप से हम हर एक विपदा मे महानायक साबित हो सकते है।

मेरे दृष्टिकोण से यही लगता है कि आज अन्तरा शब्दशक्ति ने एक ऐसा ही मौका हमारे सृजन को दिया है जिसके लिए हम आभारी हैं।


पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-117-6

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/